विकसित होने पर भी जो धर्म से शून्य हैं, वे नराधम हैं। श्रीभगवान् की धारणा से शून्य धर्म वास्तव में धर्म नहीं है, क्योंकि धर्माचरण का एकमात्र प्रयोजन परम सत्य को और उससे मनुष्य के सम्बन्ध को जानना है। गीता में श्रीभगवान् ने स्पष्ट घोषणा की है कि उनसे श्रेष्ठ अन्य कोई प्रमाण नहीं है, वे ही परम सत्य हैं। सभ्य मानव-जीवन सर्वशक्तिमान् परम सत्य भगवान् श्रीकृष्ण से अपने नित्य सम्बन्ध की खोयी चेतना को फिर से जागृत करने के लिये है। जो इस परम दुर्लभ सुअवसर का लाभ नहीं उठाता, वह **नराधम** है। शास्त्रों से ज्ञात है कि मातृगर्भ की परम दुःखदायी अवस्था में शिशु श्रीभगवान् से अपने उद्धार के लिए प्रार्थना करता है और बाहर निकलते ही उनकी आराधना करने का वचन भी देता है। विपदा में श्रीभगवान् की स्तुति करना जीवमात्र के लिये स्वाभाविक है, क्योंकि वास्तव में श्रीभगवान् से उसका शाश्वत् सम्बन्ध है। परन्तु प्रसव होते ही बालक गर्भ की पीड़ा को भूल जाता है और माया के प्रभाव में आकर अपने रक्षक की भी उसे विस्मृति हो जाती है।

अपने बालकों के सोए भगवत्प्रेम को फिर जागृत करना अभिभावकों का प्रधान कर्तव्य है। वर्णाश्रम-पद्धति में धर्मशास्त्र मनुस्मृति के अनुसार किए जाने वाले दस प्रकार के शुद्धि संस्कारों का उद्देश्य इस भगवत्प्रेम का पुर्नजागरण ही है। परन्तु अब किसी भी अंचल में इस पद्धति का दृढ़ता से अनुसरण नहीं किया जाता। परिणामस्वरूप आज विश्व में ९९.९ प्रतिशत लोग नराधम हैं।

सम्पूर्ण जनता के नराधम हो जाने पर यह स्वाभाविक ही है कि उसकी सारी नाममात्र की शिक्षा जड प्रकृति की महान् शक्ति के प्रभाव से निष्फल हो जाती है। गीता के मापदण्ड के अनुसार जिसकी विद्वान् ब्राह्मण, कुत्ते, गाय, हाथी और चाण्डाल में समदृष्टि हो, वह पण्डित है। यह सच्चे भक्त की दृष्टि है। गुरुरूप भगवदवतार श्रीनित्यानन्द प्रभु ने नराधम-शिरोमणि जगाई-मधाई बन्धुओं का उद्धार कर के नराधमों पर शुद्धभक्त की अनुकम्पा के परिवर्षण का अनुपम आदर्श स्थापित किया। इस प्रकार भगवद्भक्त की अहैतुकी कृपा से श्रीभगवान् द्वारा दण्डित नराधम में भी भगवत्प्रेम का फिर से उदय हो सकता है।

श्रीचैतन्य महाप्रभु ने भागवतधर्म का प्रवर्तन करते हुए उपदेश किया है कि लोग दैन्यभाव से भगवत्कथा का श्रवण करें। भगवद्गीता इस कथा की सार-सर्वस्व है। भागवती कथा को विनम्रता से सुनने पर नराधमों की भी मुक्ति हो सकती है। दुर्भाग्यवश, भगवत्-इच्छा के प्रति समर्पण करना तो दूर रहा, वे तो इस कथा का श्रवण तक नहीं करते। इस प्रकार ये नराधम मनुष्ययोनि के सर्वप्रधान कर्तव्य की पूर्णरूप से उपेक्षा कर रहे हैं।

(३) तीसरी श्रेणी के दुरात्मा **माययापहृत ज्ञान** कहलाते हैं, अर्थात् जिनका प्रकाण्ड ज्ञान माया शक्ति के प्रभाव से हर लिया गया है। इस श्रेणी के लोग अधिकांश में बड़े विद्वान्, दार्शनिक, कवि, साहित्यकार, वैज्ञानिक आदि होते हैं। परन्तु